© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 03 | April - June 2023

सुचेता कृपलानी का गांधीवाद पर एक विवेचना

संगीता कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा
ईमेल – naresh09071985@gmail-com
डॉ विनय कुमार पाठक
प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा
ईमेल – dr-vkpathak202@gmail-com

सार

सुचेता कृपलानी एक स्वतंत्रता सेनानी थी और उन्होंने विभाजन के दंगों के दौरान महात्मा गांधी के साथ रह कर कार्य किया था। इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल होने के बाद उन्होंने राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई थी। उन्हें भारतीय संविधान के निर्माण के लिए गठित संविधान सभा की ड्राफ्टिंग समिति के एक सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया था। उन्होंने भारतीय संविधान सभा में 'वंदे मातरम' भी गाया था। सुचेता कृपलानी उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं और भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थीं। देश की स्वतंत्रता के लिए असंख्य लोगों ने अपना योगदान दिया। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं और पुरुषों ने बराबर की हिस्सेदारी दी। स्वतंत्रता के इतने साल बाद, आज जमीन से लेकर आकाश तक ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहां महिलाओं ने अपनी उपस्थिति न दर्ज कराई हो। राष्ट्र के विकास में बराबरी से अपना योगदान देने वाली ऐसी ही एक महिला हैं– सुचेता कृपलानी। उन्हें स्वतंत्र भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता, सेनानी, आंदोलन, गांधीवाद, विचारधारा इत्यादि।

प्रस्तावना

सुचेता कृपलानी का जन्म पंजाब के अम्बाला में एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ। सुचेता कृपलानी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के इन्द्रप्रस्थ और सेंट स्टीफन कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी की थी। और बाद में वे बनारस के हिन्दू यूनिवर्सिटी की इतिहास (कानून) की प्रोफेसर बनी। बाद में उन्होंने भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस के मुख्य नेता आचार्य कृपलानी से शादी कर ली। दोनों ने परिवारों ने उनकी शादी का विरोध किया था। उनके जैसी समकालीन महिलाये अरुणा असफ अली और उषा मेहता ने भी सुचेता के साथ भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया। [1] बाद में उन्होंने महात्मा गाँधी के साथ मिलकर अहिंसा के रास्ते पर काम किया। सुचेता कृपलानी उन चंद महिलाओ में शामिल है जिन्होने बापू के करीब रहकर देश की आजादी की नीव राखी। इसके साथ ही वह 1940 में स्थापित ऑल इंडिया महिला कांग्रेस की संस्थापिका भी थी। [2] 14 अगस्त 1947 को उन्होंने वन्दे मातरम गीत भी गाया। संसद में नेहरु के भाषण देने से पहले ही उन्होंने यह गीत गाया था। आजादी के बाद भी वह राजनीती में बनी रही। 1952 में पहले लोकसभा चुनाव के लिये वह न्यू दिल्ली से खड़ी हुई। बाद में सुचेता अपने पति द्वारा स्थापित पार्टी में कुछ समय के लिये शामिल हो गयी। चुनाव में उन्होंने अपने अपने पति की पार्टी से लड़ते हुए कांग्रेस उम्मेदवार मनमोहिनी सहगल को पराजित किया था। पांच सालो बाद, उसी क्षेत्र से पुनर्निर्वाचित

की गयी, लेकिन उस समय वह कांग्रेस उम्मेदवार थी। 1967 में अंतिम बार वह लोक सभा चुनाव में उत्तर प्रदेश के गोंडा क्षेत्र से चुनी गयी थी।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सुचेता प्रथम मोर्चे पर खड़ी थीं। [3] देश की आजादी के लिए वह आवाज उठाती रहीं। वहीं जब भारत का विभाजन हुआ तो उस समय हुए दंगों में भी सुचेता कृपलानी ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर कार्य किया। वह अरुणा आसफ अली और ऊषा मेहता के साथ आजादी के आंदोलन में शामिल हुई। सुचेता कृपलानी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' में बढ़–चढ़ कर योगदान दिया और नोआखली में महात्मा गांधी के साथ दंगा पीडित इलाकों में पीड़ित महिलाओं की मदद भी की। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री के तौर पर उन्होंने हड़ताली कर्मचारियों को मजबूत इच्छाशक्ति के साथ हड़ताल वापस लेने पर मजबूर किया। वह एक ऐसी महिला थीं, जिसमें जुझारूपन कूट–कूट कर भरा था। उन्होंने अपने जुझारूपन और सूझ–बूझ का उदहारण भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान दिया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब अंग्रेजी सरकार ने सारे पुरुष नेताओं को गिरफ्तार करके जेल मे डाल दिया था, तब सुचेता कृपलानी ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए कहा, 'बाकियों की तरह मैं भी जेल चली गई तो आंदोलन को आगे कौन बढ़ाएगा।' इस दौरान भूमिगत होकर उन्होंने कांग्रेस का महिला विभाग बनाया और पुलिस से छुपते–छुपाते दो साल तक आंदोलन भी चलाया। [4] उन्होंने इसके अंतर्गत 'अंडरग्राउण्ड वालंटियर फोर्स' भी बनाई और महिलाओं और लड़कियों को ड्रिल, लाठी चलाना, प्राथमिक चिकित्सा और आत्मरक्षा के लिए हथियार चलाने की ट्रेनिंग भी दी। इसके साथ–साथ उन्होने राजनैतिक कैदियों के परिवार की सहायता की जिम्मेदारी भी उठाई ।

सुचेता कृपलानी भारत की एक प्रमुख महिला राजनेता थीं। वे 1963 में भारत के उत्तर प्रदेश राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। गांधीवादी विचारधारा के साथ वे गहरे रूप से जुड़ी थीं, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी की विचारधारा के आधार पर तैयार हुई। गांधीवाद विचारधारा में अहिंसा, सत्याग्रह, सामाजिक न्याय, सर्वोदय, स्वदेशी और ग्राम स्वराज्य जैसे तत्व शामिल हैं। [5] सुचेता कृपलानी ने गांधीवाद के इन मूल्यों को अपने राजनीतिक और सामाजिक जीवन में गहराई से अपनाया। वे अहिंसा के सिद्धान्त पर चलकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली राजनीतिक महिलाओं में से एक थीं। सुचेता कृपलानी ने सत्याग्रह के सिद्धान्त को भी अपने राजनीतिक कामकाज में लागू किया। [6] वे अपनी नेतृत्व शैली में ईमानदारी और पारदर्शिता को बहुत महत्व देती थीं। सामाजिक न्याय और समता के लिए संघर्ष करने वाली सुचेता कृपलानी गांधीवादी विचारधारा के सामाजिक न्याय और समता के तत्वों को अपनी नीतियों में शामिल करती थीं। वे महिला शक्ति के उत्थान के लिए काम करती थीं और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई काम करती थीं। सर्वोदय का ध्यान रखते हुए, सुचेता कृपलानी गरीबी उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार के लिए काम करती थीं। उनके नेतृत्व के दौरान, उत्तर प्रदेश में कई विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाया गया था।

स्वदेशी और ग्राम स्वराज्य के प्रति समर्पित, सुचेता कृपलानी ग्रामीण विकास और भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास करती थीं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, कृषि, और उद्योग विकास के लिए प्रयास करती थीं। [7] इन सभी बातों को मध्य नजर रखते हुए, सुचेता कृपलानी की गांधीवादी विचारधारा उनके

राजनीतिक और सामाजिक जीवन के हर पहलू में झलकती है। उन्होंने महातमा गांधी के सिद्धांतों को अपनी नेतृत्व शैली, नीति निर्माण, और सामाजिक कार्य में अमल किया। सुचेता कृपलानी का योगदान भारतीय राजनीति में महिला नेताओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। उनके गांधीवादी विचारधारा के अनुयायी आज भी उनके सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को मान्यता देते हैं। सुचेता कृपलानी की गांधीवादी विचारधारा ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय और यादगार नेता के रूप में स्थापित किया है। उनकी नेतृत्व शैली और विचारधारा से कई नेता और कार्यकर्ता प्रभावित होते हैं और गांधीवाद के सिद्धांतों को अपने काम में लागू करते हैं। इस प्रकार, सुचेता कृपलानी की गांधीवादी विचारधारा उनके काम, नेतृत्व, और सामाजिक जिम्मेदारियों को आधारित करती है। उनके जीवन का उद्देश्य गांधीवाद के सिद्धांतों के प्रति समर्पण था, जो उनके काम और नीतियों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। [8]

सुचेता कृपलानी को प्रभावित करने वाली गांधीवादी विचारधारा :

- अहिंसा: महात्मा गांधी की तरह, कृपलानी राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अहिंसक साधनों में विश्वास करते थे। उन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाई और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट रही।
- सत्य: कृपलानी ने अपने निजी जीवन और अपने राजनीतिक जीवन दोनों में सत्य के महत्व में गांधी के विश्वास को अपनाया। उन्होंने शासन में पारदर्शिता और ईमानदारी की वकालत की।
- स्वराज : कृपलानी स्वराज, या स्व–शासन की गांधी की अवधारणा के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी प्राप्त की जा सकती है जब लोग खुद पर शासन करने में सक्षम हों और अपने जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में अपनी बात कह सकें।
- महिला सशक्तिकरण: कृपलानी स्वयं एक मजबूत और स्वतंत्र महिला होने के साथ–साथ महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण की समर्थक थीं। वह महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के महत्व में गांधी के विश्वास से प्रेरित थीं।
- रचनात्मक कार्य कृपलानी राष्ट्र निर्माण के साधन के रूप में रचनात्मक कार्य के महत्व में विश्वास करते थे, जैसा कि गांधी ने समर्थन किया था। उन्होंने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया, और सामाजिक उत्थान और विकास के उद्देश्य से कार्यक्रमों में शामिल थीं।
- एकता और सांप्रदायिक सद्भाव: कृपलानी ने भारत में विभिन्न धार्मिक और जातीय समूहों के बीच एकता और सद्भाव को बढ़ावा देने की दिशा में काम किया। उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव के गांधीवादी आदर्श को बरकरार रखा और लोगों को उनके मतभेदों के बावजूद एक साथ लाने का प्रयास किया। [9]

सुचेता कृपलानी अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन में गांधीवादी विचारधारा से गहराई से प्रभावित थीं। उन्होंने अहिंसा, सत्य, स्वशासन, महिला सशक्तिकरण, रचनात्मक कार्य और सांप्रदायिक सद्भाव जैसे प्रमुख सिद्धांतों को अपनाया, जिसने जीवन भर उनके कार्यों और निर्णयों का मार्गदर्शन किया। [10]

निष्कर्ष

सुचेता कृपलानी एक प्रमुख भारतीय महिला नेता थीं जो गांधीवादी विचारधारा के सिद्धांतों को अपने राजनीतिक और सामाजिक जीवन में गहराई से अपनाती थीं। उनका योगदान महिला नेतृत्व, सामाजिक न्याय, ग्रामीण विकास और भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। सुचेता कृपलानी की गांधीवादी विचारधारा ने उन्हें भारतीय राजनीति में एक प्रेरणादायक नेता के रूप में स्थापित किया है, जिनकी नीतियाँ और आदर्श आज भी कई नेताओं और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करती हैं। सुचेता कृपलानी का जीवन और काम गांधीवाद के सिद्धांतों के प्रति समर्पित था, और उन्होंने अपने नेतृत्व में अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वदेशी, और ग्राम स्वराज्य जैसे मूल्यों को अपनाया। उनका जीवन भारतीय राजनीति और सामाजिक जागरूकता के लिए एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनकी गांधीवादी विचारधारा के कारण, वे न केवल महिलाओं के लिए एक रोल मॉडल बनीं, बल्कि भारत के विकास और समृद्धि के लिए एक निश्चित दिशा निर्देशित करती थीं। सुचेता कृपलानी के नेतृत्व और गांधीवादी विचारधारा का अभिनव भारत के निर्माण में एक अभेद्य योगदान है, जिसे आने वाली पीढ़ियों को याद रखना चाहिए। उनकी विचारधारा ने सामाजिक और राजनीतिक विकास के लिए एक स्थायी आधार प्रदान किया है, जो आज भी नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा देता है।

संदर्भ सूची

1. रामचंद्र गुहा "आधुनिक भारत के निर्माता" पेंगुइन इंडिया (2011)
2. "आचार्य जे.बी. कृपलानी संघर्ष और बलिदान का जीवन" जी.एन. डेवी, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम में प्रकाशित
3. कुमार, राधा. "द हिस्ट्री ऑफ डूइंग एन इलस्ट्रेटेड अकाउंट ऑफ मूवमेंट्स फॉर वुमन राइट्स एंड फेमिनिज्म इन इंडिया 1800–1990" जुबान बुक्स, 1993
4. शर्मा, शशि प्रभा। " वीमेन इन दी इंडियन नेशनल मूवमेंट अनसीन फेसेस एंड उन्हेअर्ड वॉइसेस 1930–42" सेज पुब्लिकेशन्स 2006
5. नंदा, बी.आर. "महात्मा गांधी एक जीवनी" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002
6. राज लक्ष्मी गौड़ – नारी जागरण और गांधी जी (लेख) , मध्यप्रदेश संदेश , 1971
7. महात्मा गाँधी "हिन्द स्वराज" सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी 2019
8. चक्रवर्ती, विद्युत, और राजेंद्र के. पांडे "मॉडर्न इंडियन पोलिटिकल थॉट टेक्स्ट एंड कॉन्टेक्स्ट" सेज पुब्लिकेशन्स 2009
9. सरकार, सुमित "आधुनिक भारत 1885–1947" मैकमिलन इंडिया, 1983
10. वोलपर्ट, स्टेनली "भारत का एक नया इतिहास" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008